बिहार का सिनेमा संसार

अपनी रंगमंचीय समृद्धि के लिए सुख्यात बिहार के कला-जगत ने सिनेमा में भी बहुस्तरीय योगदान किया है। निर्माण, निर्देशन, अभिनय, गीत, संगीत, पटकथा, संपादन आदि विविध क्षेत्रों में बिहार के विशेषज्ञों तथा कलाकारों ने हिन्दी फिल्म जगत में पहचान बनायी है। भोजपुरी फिल्मों के विकास में तो बिहार का प्रमुखतम योगदान रहा है। फिल्मों के साथ बिहार के इस रिश्ते का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक से होता है। यह इतिहास इस दिलचस्प तथ्य से प्रारंभ होता है कि

प्रकाश झा की फिल्म 'मृत्युदंड' में दाहिने से प्यारेमोहन सहाय, माधुरी दीक्षित, अयूब खान और परेश सिन्हा

14 मार्च 1931 ई० को मुंबई में पहली सवाक् हिन्दी फिल्म 'आलम आरा' का प्रदर्शन हुआ और 1933 ई० की जनवरी में रतन टॉकीज राँची में देव (औरंगाबाद, बिहार) के महाराजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह 'किंकर' द्वारा निर्मित सवाक् फिल्म 'पुनर्जन्म' का प्रदर्शन हुआ। बावजूद इसके वह फिल्म बिहार की सिने यात्रा का पहला कदम नहीं थी। उसके पूर्व महाराजा जगन्नाथ सिंह ने ही देव के छठ मेले पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म तैयार की थी। कुल 32 दिनों में तैयार उस फिल्म का लेखन, निर्माण और निर्देशन तीनों महाराजा ने स्वयं किया था। उस फिल्म के निर्माण में गैर-बिहारी मात्र एक जर्मन तकनीशियन ब्रूनो था।

आज यानी 2008 ई० में खड़े होकर देखा जाय तो बिहार की फिल्मी यात्रा का इतिहास लगभग 78-80 वर्ष पूर्व से प्रारंभ होता है।

महाराजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह 'किंकर' कवि होने के साथ ही उच्च कोटि के अभिनेता और निर्देशक भी थे। अपने बहनोई गिद्धौर रियासत के राजा गुरु प्रसाद सिंह की प्रेरणा से वे 1924 ई० के लगभग कलकत्ते के फिल्म निर्माता धीरेन गांगुली से मिले और उनकी प्रेरणा से फिल्म तकनीक की शिक्षा प्राप्ति के लिए इंग्लैंड गये। वहाँ से लौटकर उन्होंने 'छठ मेला' और 'पुनर्जन्म' नामक फिल्में बनायी थीं। 'पुनर्जन्म' की पटकथा उनकी ही लिखी हुई थी और फिल्म का निर्देशन धीरेन गांगुली ने किया था। उसके तकनीकी पक्ष को

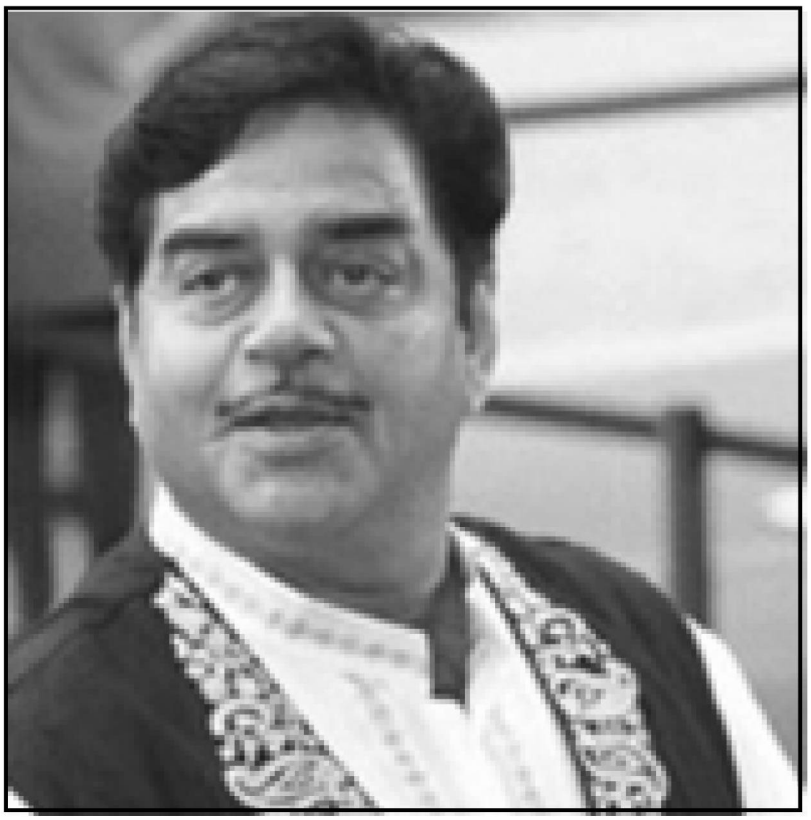

शत्रुघ्न सिन्हा

जर्मन ब्रूनो ने सँभाला था। बाकी सब बिहार के कलाकारों द्वारा बिहार में ही किया गया था। फिल्म की शूटिंग गया जिले के ही विभिन्न स्थानों पर संपन्न हुई थी और संपादन आदि तकनीकी कार्य राजमहल में स्थित स्टूडियो में किये गये थे। उसमें नायक बिल्व मंगल की भूमिका गया के वकील अवध बिहारी प्रसाद ने निभाई थी। नायिका चिंतामणि की भूमिका में आरती देवी (रैचलसोफिया) थीं। बिल्व मंगल के पिता की भूमिका स्वयं महाराजा ने निभाई थी और बालकृष्ण की भूमिका में बड़े राजकुमार इंद्रजीत सिंह थे। उस फिल्म का छायांकन ए० के० सेन और एस० डेविड ने किया था। उस फिल्म-निर्माण में नन्नीगोपाल भट्टाचार्य ने भी महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभाई थी। फिल्म को 'बिल्व मंगल' के नाम से ही प्रसिद्धि मिली थी।

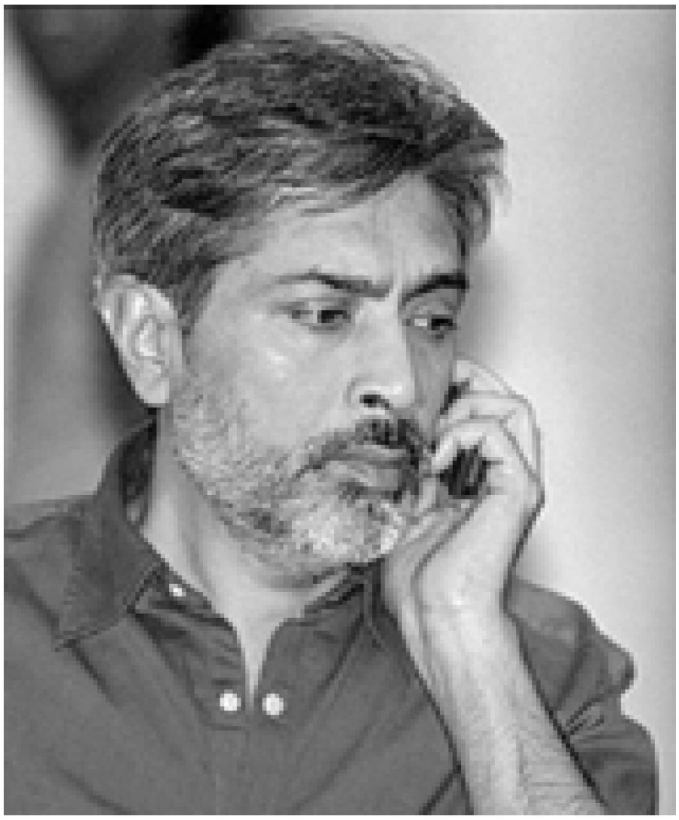

प्रकाश झा

बिहार का दुर्भाग्य रहा कि सन् 1934 ई० के भूकंप में स्टूडियो के अधिकांश मूल्यवान सामान नष्ट हो गये और उसी वर्ष महाराजा की आकस्मिक मृत्यु भी हो गई। महाराजा की मृत्यु क्या हुई कि बिहार में जैसे फिल्म-निर्माण की हवा या चेतना ही लुप्त हो गयी। बिहार के निवासी निर्माता-निर्देशकों द्वारा ढेर सारी भोजपुरी और हिन्दी फिल्में बनाई गई हैं लेकिन बिहार में फिल्म निर्माण का स्वप्न महाराजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह के किले में साकार होने के बाद जो लुप्त हुआ सो फिर लौटकर वापस नहीं आ सका। बिहार के कुछ अंचलों-स्थानों में शूटिंग भले होती रही है परंतु अन्य सारे कार्य संपादित होते हैं मुंबई के ही किसी फिल्म स्टूडियो में।

महाराजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह के स्टूडियो के विनाश और उनके निधन के उपरांत लगभग

तीन दशकों तक बिहार फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में प्राय: सूना बना रहा है। उसके बाद भोजपुरी फिल्मों का एक दौर शुरू होता है जिसमें 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' (निर्माता विश्वनाथ शाहाबादी) और 'लागी नाहीं छुटे राम' जैसी अनेक पक्षों से अच्छी फिल्में बनती हैं। 'हमार संसार' तथा 'विदेसिया' ने भी प्रसिद्धि पाई थी परंतु 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' और 'लागी नाहीं छुटे राम' के गीत-संगीत वाली लोकप्रियता आजतक किसी अन्य भोजपुरी फिल्म को प्राप्त नहीं हो सकी।

शेखर सुमन

भोजपुरी फिल्मों के दूसरे दौर में फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में अशोकचन्द्र जैन और मुक्ति नारायण पाठक ने अनेक भोजपुरी फिल्में दी थीं। उस दौर में 'गंगा किनारे मोरा गाँव', 'दूल्हा गंगा पार के', 'दंगल', 'सुहाग बिंदिया', 'गंगा आबाद रखिहऽ सजनवा के', 'बिहारी बाबू' आदि अनेक फिल्में बनी थीं। अभिनेता कुणाल उस दौर की भोजपुरी फिल्मों के सुपर स्टार बनकर उभरे थे। भोजपुरी फिल्मों के वर्तमान दौर में मनोज तिवारी और रवि किशन ने अभूतपूर्व अभिनय क्षमता प्रमाणित की है और भरपूर प्रसिद्धि भी पाई है। अबतक दो सौ से अधिक भोजपुरी फिल्में बन चुकी हैं। गिरीश रंजन ने 'मोरे मन मितवा' नाम से एक मगही फिल्म भी बनाई थी।

बिहार ने सिनेमा संसार को विविध क्षेत्रों में समृद्धि तथा स्तरीयता दी है। रामायण तिवारी, शत्रुघ्न सिन्हा, प्यारेमोहन सहाय, शेखर सुमन, कुणाल, मनोज वाजपेयी, विनीत सिन्हा, मनोज तिवारी

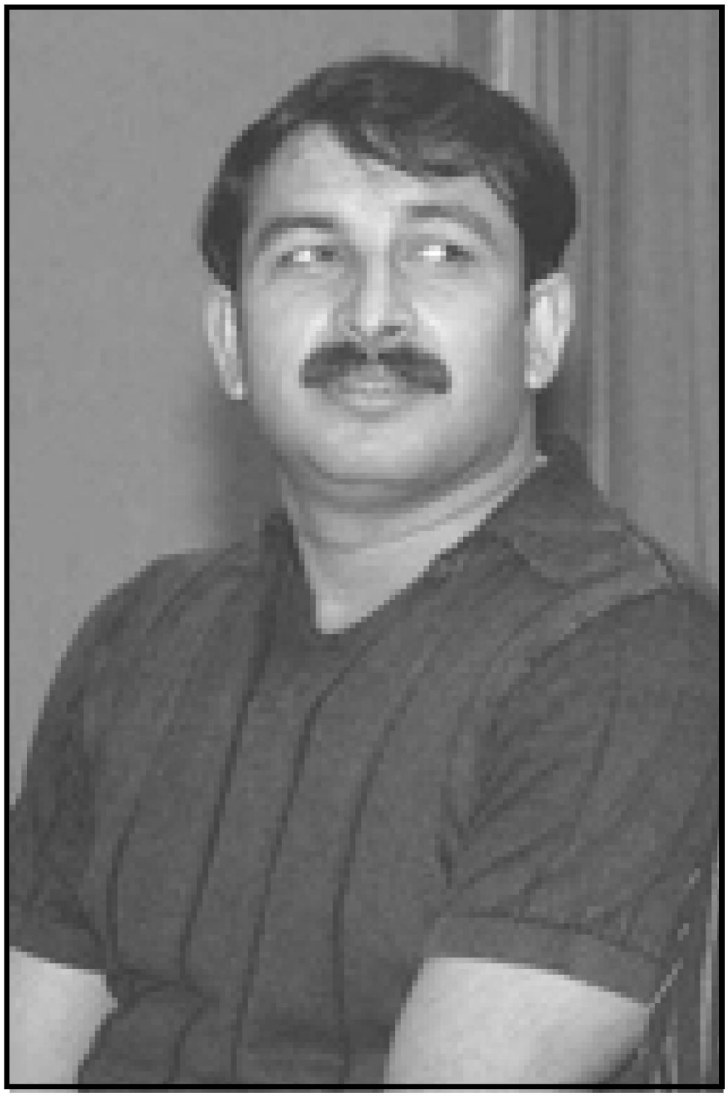

मनोज तिवारी

और रवि किशन अभिनय के क्षेत्र में एक ऐसे स्वतंत्र अध्याय का निर्माण करते हैं जिसके अभाव में भारतीय सिनेमा का इतिहास अपंग हो जायेगा। अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त फिल्म 'गाँधी' के एक छोटे दृश्य में बिहारी अभिनेत्री स्व० नूर फातिमा के अभिनय ने असीम प्रशंसा पाई थी।

संगीतकार चित्रगुप्त और श्याम सागर का योगदान तो सर्वविदित है ही, गिरीश रंजन और प्रकाश झा ने निर्माण-निर्देशन में भी फिल्मों को अनेक ऊँचाइयाँ दी हैं। 'कल हमारा है' और 'डाकबंगला' जैसी फिल्में गिरीश रंजन का हिन्दी फिल्म को खूबसूरत उपहार है। प्रकाश झा हिन्दी फिल्म जगत के दो-चार वैसे निर्देशकों में हैं जिन्होंने हिन्दी फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय सोद्देश्यता से जोड़ा है। प्रकाश झा के निर्देशन का प्रारंभ 'हिप हिप हुर्रे' से हुआ था जिसमें उनके व्यावसायिकता मुक्त रुझान का पता चला था। उसके बाद उन्होंने 'दामुल', 'मृत्युदंड', 'परिणति', 'बंदिश', 'राहुल', 'गंगाजल' और 'अपहरण' के द्वारा फिल्म-निर्देशन तथा अपनी परिष्कृत अभिरुचि के अनेक नूतन आयामों से हिन्दी सिनेमा संसार को परिचित कराया है।

मोहम्मद रफी, मुकेश और किशोर कुमार के बाद हिन्दी सिनेमा के पार्श्वगायन में सर्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त करने वालों में उदित नारायण का नाम सर्वोपरि रहा है। बिहार की कलाभूमि मिथिलांचल की उपज उदित नारायण झा के गायन ने अंतरराष्ट्रीय ख्याति पाई है। फिल्म में संपादन का कार्य बड़ा ही महत्त्वपूर्ण हुआ करता है परंतु संपादन करने वाले को कोई प्रसिद्धि नहीं मिल पाती। यही कारण है कि मोतीहारी के श्रीधर मिश्र हिन्दी फिल्मों के बुजुर्ग संपादकों में से एक रहे हैं परंतु प्रसिद्धि नहीं पा सके हैं। सुपरहिट हिन्दी फिल्म 'कृष' के 'दिल ना दिया' गाने की प्रसिद्धि से सब लोग परिचित हुए परंतु कितने लोग जानते हैं कि उस गीत का रचनाकार अपने बिहार का ही एक युवा कवि विजय कुमार 'अकेला' है।

मनोज वाजपेयी

निर्माण, निर्देशन, अभिनय, पटकथा लेखन, संगीत, गीत, संपादन आदि हर क्षेत्र में इतनी महत्त्वपूर्ण प्रतिभाओं के भंडार इस राज्य में सिनेमा उद्योग आज भी क्यों मुंबई का मुखापेक्षी बना हुआ है, यह सोचने की बात है।

अभ्यास

1. बिहार में सबसे पहली फिल्म किसने बनाई थी और उस फिल्म का नाम क्या था?
2. बिहार की सबसे पहली डाक्यूमेंट्री फिल्म कौन थी?
3. फिल्म-निर्देशक प्रकाश झा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. सिनेमा जगत में भोजपुरी फिल्मों के योगदान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. अभिनय के क्षेत्र में सिनेमा को बिहार का योगदान पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दें।
6. शत्रुघ्न सिन्हा और मनोज वाजपेयी में आप क्या अंतर पाते हैं?
7. हिन्दी सिने संसार में शत्रुघ्न सिन्हा के महत्त्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।
8. 'अध्ययन में सिनेमा का महत्त्व' इस विषय पर एक निबंध लिखें।
9. सिने जगत को गिरीश रंजन के योगदान का संक्षिप्त परिचय दें।

श्याम शर्मा
का एक अन्य
रेखांकन
'शाकाहारी शेर'

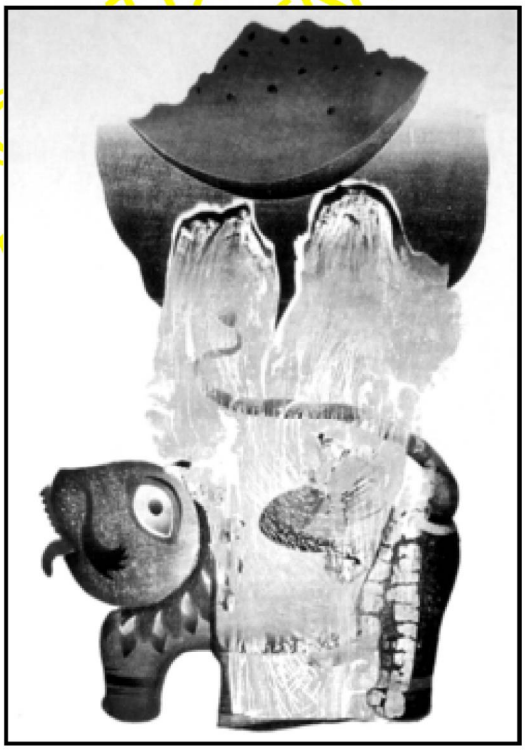

© BTBPC NOT TO BE REPRINTED